कुमार जीवन - 54

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **कुमारों से :- (1)** कुमार अर्थात् निर्बन्धन। **सबसे बड़ा बन्धन मन के व्यर्थ संकल्पों का है।** इसमें भी निर्बन्धन। कभी-कभी यह बन्धन बांध तो नहीं लेता है? क्योंकि संकल्प शक्ति हर कदम में कमाई का आधार है। याद की यात्रा किस आधार से करते हो? संकल्प शक्ति के आधार से बाबा के पास पहुँचते हो ना! अशरीरी बन जाते हो। तो मन की शक्ति विशेष है। **व्यर्थ संकल्प मन की शक्ति को कमज़ोर कर देते हैं।** इसलिए इस बन्धन से मुक्त।

➳ _ ➳ कुमार अर्थात् सदा तीव्र पुरुषार्थी। क्योंकि **जो निर्बन्धन होगा उसकी गति स्वत: तीव्र होगी। बोझ वाला धीमी गति से चलेगा।** हल्का सदा तीव्रगति से चलेगा। अभी समय के प्रमाण पुरुषार्थ का समय गया। **अब तीव्र पुरुषार्थी बन मंज़िल पर पहुँचना है।**

➳ _ ➳ कुमारों ने पुराने व्यर्थ के खाते को समाप्त कर लिया है? नया खाता समर्थ खाता है। पुराना खाता व्यर्थ है। तो पुराना खाता खत्म हुआ। **वैसे भी देखो व्यवहार में कभी पुराना खाता रखा नहीं जाता है।** पुराने को समाप्त कर आगे खाते को बढ़ाते रहते हैं। तो यहाँ भी पुराने खाते को समाप्त कर सदा नये ते नया हर कदम में समर्थ हो। हर संकल्प समर्थ हो। जैसा बाप वैसे बच्चे। बाप समर्थ है तो बच्चे भी फ़ालो फ़ादर कर समर्थ बन जाते हैं। (18-11-1985)

➢➢ संकल्प शक्ति से हम क्या क्या कर सकते हैं ?

➳ _ ➳ बाप के पास पहुँच सकते हैं

➳ _ ➳ अशरीरी बन सकते हैं

➳ _ ➳ याद की यात्रा कर सकते हैं

➳ _ ➳ खोयी हुई खुशी पा सकते हैं

➳ _ ➳ स्वयं को शुद्ध बना सकते हैं

➳ _ ➳ स्वराज्य अधिकारी बन सकते हैं

➳ _ ➳ अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति कर सकते हैं

➳ _ ➳ दूसरों को खुशी दे सकते हैं

➳ _ ➳ असंभव को संभव कर सकते हैं

➳ _ ➳ निराश और थकी हुई आत्माओं में उमंग उत्साह भर सकते हैं

➳ _ ➳ देह की बीमारियों को नष्ट कर सकते हैं

→ अगर सांप के काटने पर

- तुमने उसे अस्वीकार कर दिया है तो
  - वह विष शक्तिहीन हो जाएगा

➳ _ ➳ दूर बैठी आत्माओ तक संकल्प पहुंचा सकते हैं

➳ _ ➳ स्वयं के / दुसरों के विकारी संकल्पों को भस्म कर सकते हैं

➳ _ ➳ विघनो का नाश कर सकते हैं

➳ _ ➳ विरोधी आत्माओं को सहयोगी बना सकते हैं

➳ _ ➳ आत्माओं के हृदय में परमात्म उत्पन्न कर सकते हैं

➳ _ ➳ माफ़ किया जा सकता है और उनसे माफ़ी मांगी जा सकती है

➢➢ पुरुषार्थ के मुख्य बिंदु

➳ _ ➳ सभी महान कार्य

→ शक्तिशाली संकल्प से शुरू होते हैं

- पर यहाँ पर विश्वास का नियम (Law Of Faith) लागु होता है
  - संकल्प पूरे विश्वास के साथ और पूरी एकाग्रता के साथ किया जाना चाहिए
  - संकल्प की Quality उंच ते उंच होनी चाहिए

➳ _ ➳ मन

→ More Concentrated It Is… More Powerful It Becomes….

→ मन जितना ज्यादा एकाग्रचित होगा... उतना ज्यादा शक्तिशाली होगा...

➳ _ ➳ अवचेतन मन

→ अनंत शक्तियों का भण्डार है

➳ _ ➳ विकारी संकल्प (नकारात्मक संकल्प) आने पर

→ उसक विरोध के संकल्प (सकारात्मक संकल्प) तुरंत खड़े करो

- ताकि वो कर्म में न आये
  - हम अधिकतर उन्ही बातों के लिए पश्चाताप करते हैं ... जो कर्म में आये
  - सिर्फ संकल्पों के लिए हम इतना पश्चाताप नहीं करते
- क्योंकि माया सबस पहले संकल्पों के तल पर ही आती है
  - इसलिए माया को सम्पूरण रूप से नष्ट भी संकल्पों के तल पर ही किया जा सकता है
- काम विकार के समय संकल्पों का आवेग बहुत तीव्र होता है
  - उस समय संकल्पों की गति सबसे तेज होती है

→ **7 S**

- **S**top
  - मन को आदेश दो :- “रुक जाओ”
- **S**wap / Replace
  - नकारात्मक संकल्पों को सकारात्मक संकल्पों से INTERCHANGE कर दो
- **S**witch
  - उस स्थान को छोड़ दीजिये
  - अपनी Activity Change कर दो
- **S**hhhhhhhhhhhhh……

- चुप कर जाओ
- योग लगाओ
- स्वयं से रूहरिहान करो
- बाप से रूहरिहान करो

■ Scribe

- लिखना शुरू कर दीजिये

■ Speculate / सिर्फ “भय” की परिस्थितियों के लिए

- सोचिये की “ज्यादा से ज्यादा क्या हो हो सकता है ?”
- और स्वयं को निर्भय कर दीजिये

■ Song

- बाबा के गीत सुनिए

■ Swarg

- स्वर्ग के दिनों को याद कीजिये